प्रमोद भावना के द्वारा नील लेश्या से मुक्ति संभव

- युवाचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं, 29 जून।

''छह प्रकार की लेश्याओं में दूसरे प्रकार की लेश्या है नील लेश्या। यह मयुर के कंठ की भांति चमकीले नीले रंग की होती है। जिसका का स्वाद तीखा अदरक की तरह होता है। जिस व्यक्ति में नील लेश्या होती है वह व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है।''

उक्त विचार युवाचार्यश्री महाश्रमण ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित धर्मसभा को नील लेश्या के प्रभावों की चर्चा करते हुए व्यक्त किये।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि आदमी की कमजोरी होती है कि वह दूसरों को आगे बढ़ता देखकर उसमें ईर्ष्या की भावना आ जाती है वह दूसरे व्यक्ति के विकास को देखकर स्वयं दुःखी भी बन जाता है। किंतु होना यह चाहिए परस्पर प्रमोद भावना हो और अपने साथी को आगे बढता देखकर सुखी होनी चाहिए।

युवाचार्यश्री ने कहा कि नील लेश्या से प्रभावित व्यक्ति कदाग्रही होता है, रस लोलुपता होती है, लज्जाहीन होता है। अज्ञानता वाला होता है, और अज्ञानता वाला व्यक्ति हित और अहित को नहीं समझ पाता है। नील लेश्या से प्रभावित व्यक्ति में आलस्य होता है जो एक बड़ा महान शत्रु माना गया है। जो व्यक्ति उद्यमी परिश्रमी होता है वही आगे बढ़ सकता है, धन को प्राप्त कर सकता है। इसलिए नील लेश्या से मुक्त होने के लिए प्रमोद भावना और पुरुषार्थ आवश्यक है।

विशेष :

आज मुनि आलोककुमार जी ने छापर से विहार करके आज जैन विश्व भारती में आचार्यश्री महाप्रज्ञ के दर्शन किये और अपने विचार व्यक्त किये।